जिंदगी में कभी घमंड मत करना वक्त, विरासत और वजूद कब खत्म होगा पता भी नहीं चलेगा।
– अज्ञात

कमर कस रहा है भारत

कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई तमाम मोर्चों पर पूरी शिद्दत के साथ जारी है। भारत में संक्रमण का पता लगाने के लिए किए गए टेस्ट्स की संख्या 20 लाख को पार कर गई है। संसाधनों की सीमा को देखते हुए माना जा रहा था कि यह लक्ष्य मई के अंत तक ही हासिल हो पाएगा।

मनोज जोशी।

लॉकडाउन के तीन चरण पूरे कर लेने के बाद देश इसके चौथे चरण के लिए कमर कस रहा है। कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई तमाम मोर्चों पर पूरी शिद्दत के साथ जारी है। भारत में संक्रमण का पता लगाने के लिए किए गए टेस्ट्स की संख्या 20 लाख को पार कर गई है। संसाधनों की सीमा को देखते हुए माना जा रहा था कि यह लक्ष्य मई के अंत तक ही हासिल हो पाएगा। मगर सरकारी और गैर–सरकारी लैब्स में कोरोना वॉरियर्स के दिन–रात लगे रहने का परिणाम है कि यह टारगेट दो सप्ताह पहले ही हासिल कर लिया गया।

हमारे यहां कोरोना से होने वाली मौतों की संख्या अमेरिका और यूरोप से काफी कम है, लेकिन संक्रमण फैलने की गति लगभग वैसी ही है। कुल संक्रमितों की संख्या के मामले में भारत ने चीन को पीछे छोड़ दिया है। चीन हमारा पड़ोसी देश है और उसके साथ भारत की तुलना बात–बात पर होती है, लेकिन महामारी से निपटने के दोनों देशों के तरीके बिल्कुल अलग रहे हैं।

चीन में इस वायरस का प्रकोप मुख्यतः उसके एक शहर वूहान तक सीमित रहा मगर भारत में इसकी शुरुआत पूरे देश के पैमाने पर हुई। यूरोपीय देशों में इससे संक्रमित बिना लक्षणों वाले मरीज भारत के अलग–अलग शहरों में तब आए जब वहां भी इसे ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया जा रहा था। भारतीय हवाई अड्डों पर सिर्फ बुखार नापकर उन्हें आगे जाने दिया गया। नतीजा यह कि रोक–छेंक शुरू होने से पहले ही बीमारी देश के हर हिस्से में फैल चुकी थी। याद रहे, शुरू से ही खतरनाक माने जाने के बावजूद इस वायरस को लेकर सरकारों और जनसमूहों का रुख बदलता रहा।

हर देश के जिम्मेदार लोग पहले डिनायल मोड में गए। भारत में तो यह वायरस आ ही नहीं आ सकता, आ भी गया तो मई में पारा 40 डिग्री लांघते ही जुकाम के वायरस की तरह टें बोल जाएगा। यह भी कि हमारे देसी नुस्खे इसकी बैंड बजा देने के लिए काफी हैं। जब यह बीमारी इटली में तबाही मचा रही थी, तब भी एक दिन के जनता कर्फ्यू के दौरान लोग इस बात को लेकर आश्वस्त दिखे कि इस मास्टरस्ट्रोक से कोरोना का इंसानी संपर्क टूट जाएगा और उसका खेल खत्म हो जाएगा!

ऐसी गलतफहमियां बीमारी के बढ़ाव के साथ ध्वस्त होती गईं। और अब, तमाम देशों द्वारा अपनी सीमाएं सील करने, एक–दूसरे से हवाई संपर्क तोड़ने और तमाम आर्थिक गतिविधियां रोक देने, शारीरिक दूरी और लॉकडाउन का रास्ता अपनाने तथा करोड़ों लोगों को भुखमरी की जद में ला देने का लंबा दौर गुजर जाने के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन बता रहा है कि कोरोना वायरस निकट भविष्य में विदा हो जाने वाली चीज नहीं। एड्स के वायरस की तरह हमें इसको दुनिया का स्थायी अंग मानने और सालों साल इससे बच–बचाकर चलने का मन बनाना पड़ सकता है। यह सूचना इतनी भयावह है कि इसे आत्मसात करने में दुनिया को लंबा वक्त लगेगा।

समर्थ

अशोक वोहरा।

जब हम अपने बच्चों को रचयिता को सौंपने के लिए समर्थ हो जाते हैं, तो ऐसा करने से उनके प्रति हमारी जिम्मेदारियां कम नहीं हो जाती और ना ही हमारा बंधन उन्हें किसी परेशानी में डालता है। हम बस उन असीम दिव्य ऊर्जाओं को अपने बच्चे को वो समर्थन प्रदान करने की अनुमति दे रहे हैं जो माता–पिता के रूप में हम उन्हें प्रदान करते हैं और जो शायद हम अपने भौतिक शरीर की सीमाओं में रहकर नहीं दे सकते। बहुत सारी दिव्य समर्थन बड़ी सहजता से हमारे माध्यम से भी प्रदान किये जायेंगे। यह आश्वस्त करेगा कि जो भी चीजें होती है वो उनके लिए बेहतर और उनके रूचि के अनुसार है और जो भी जन्म लेता है वो अपने जीवन की यात्रा करने में समर्थ है। यह सकारात्मक ऊर्जाएं सिर्फ इसलिये जन्म लेती हैं ताकि वो उनके जीवन और हमारे बीच के रिश्ते को मजबूत कर सके।

संपादकीय

अत्यंत कठिन काम

यह सामान्य कार्य नहीं है। जब तक व्यवस्था में भ्रष्टाचार, काहिली, लालफीताशाही रहेगी और कानून से वैसे आचरण को समर्थन मिलेगा, हम इस संकट से उबरकर भारत को आत्मनिर्भर तथा विश्व का मार्गदर्शक देश नहीं बना सकते। हमारा सदियों तक गौरव का इतिहास रहा तो उसका मूलाधार हमारी व्यवस्था और उस समय के अनुरूप आदर्श कानून थे। यह अत्यंत कठिन काम है लेकिन करना ही होगा। हमारे पास दुनिया की सबसे ऊर्जावान डेमोग्राफी है, जिसमें टैलंट है, उत्साह है। आत्मनिर्भरता में अर्थव्यवस्था की मजबूती और समाज के निचले तबके तक की न्यूनतम आवश्यकता की सुनिश्चित आपूर्ति शामिल है। लेकिन आत्मसंयम और आत्मानुशासन का व्यवहार भी इसका हिस्सा है। इसी में आगे मोदी ने जोड़ा कि आत्मनिर्भरता सुख और संतोष देने के साथ–साथ हमें सशक्त भी करती है। यह विचार वर्तमान आर्थिक ढांचे में विजातीय जैसा लगता है क्योंकि भोग और उत्पादन से विकास की अवधारणा के यह विपरीत है। किंतु भारत का यही मार्ग हमें आत्मनिर्भर बनाएगा और विश्व स्तर पर छीनाझपटी, शोषण, दमन और स्वार्थों के लिए संघर्ष की स्थिति इसी विचार से धीरे–धीरे खत्म हो सकती है। सच कहा जाए तो मोदी का आत्मनिर्भरता का आह्वान सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आह्वान है। इसमें आर्थिक समुन्नयन के लिए आधारभूत ढांचे का निर्माण करना है तो शिक्षा को भी ऐसे ही उदार विचारों वाले खांचे में ढालना है। प्रधानमंत्री ने कहा भी कि कर्मठता की पराकाष्ठा हो और कौशल की पूंजी हो तो हमें आत्मनिर्भर बनने से कौन रोक सकता है। नेतृत्व का कार्य देश को दिशा देना तथा उसके लिए रास्ते और आधार का निर्माण करना होता है। प्रधानमंत्री वही कर रहे हैं।

मोदी का उद्बोधन अभी के इन संकटों और भावी विश्व व्यवस्था का भारतीय दृष्टिकोण से आकलन कर आंतरिक और बाह्य मोर्चों पर अपने देश का रुख तय करने की ओर लक्षित था।

लोकल को वोकल करें

अवधेश कुमार।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आत्मनिर्भर भारत की बात कहने के साथ ही इस पर बहस शुरू होना स्वाभाविक है। देश में एक वर्ग मोदी से इस सीमा तक नफरत करता है कि वे कुछ भी बोलें, उसमें केवल नकारात्मक पहलू ही तलाशता है। दूसरी ओर मोदी समर्थकों में भी ऐसे लोगों की बड़ी संख्या है जो उनकी बातों को गहराई से समझे बिना ही अर्थ बताने लगते हैं। वर्तमान दौर दुनिया में प्रमुख देशों द्वारा भूमंडलीकरण के विपरीत आचरण का है। वे अब अपने में सिमटने लगे हैं और संरक्षणवाद अपना रहे हैं। मोदी का उद्बोधन अभी के इन संकटों और भावी विश्व व्यवस्था का भारतीय दृष्टिकोण से आकलन कर आंतरिक और बाह्य मोर्चों पर अपने देश का रुख तय करने की ओर लक्षित था। उन्होंने कहा कि 21 वीं सदी भारत की सदी हो सकती है, लेकिन इसका रास्ता आत्मनिर्भरता का होगा।

अंग्रेजों के आने के पहले भारत आर्थिक दृष्टि से विकसित और आत्मनिर्भर देश था। धीरे–धीरे भारतीय सभ्यता और संस्कृति की जो मूल प्रकृति थी, उससे हम विलग होते गए। इसी कारण हमारा पतन हुआ और अंग्रेज हम पर विजय पाने में सफल हुए। लेकिन हमारा संस्कार जीवित रहा, जिससे स्वतंत्रता संघर्ष की धारा

फूट निकली। भारतीय संदर्भों में स्वतंत्रता एक व्यापक अवधारणा है जिसमें आर्थिक, सांस्कृतिक, सभ्यतागत आजादी तथा मनुष्य की अंतिम मुक्ति की स्थिति कायम रखना सन्निहित है। यदि प्रधानमंत्री के पूरे भाषण को ध्यान से देखें तो वे आत्मनिर्भरता की इसी विस्तृत अवधारणा को आगे बढ़ाते हैं। उन्होंने लोकल को वोकल करने की बात की, इसे जीवन मंत्र बनाने की अपील भी की। यहां लोकल को अपनाने के साथ उसे ग्लोबल बनाने का भाव है। हमें लोकल सामान खरीदना है, उसका प्रचार करना है और उस पर गर्व भी करना है, लेकिन इसमें उस स्वदेशी का आग्रह नहीं है, जिसे उत्साह में अनेक मोदी समर्थक प्रचारित कर रहे हैं। मोदी ने स्पष्ट किया कि भारत का संस्कार ऐसा है कि हमारी आत्मनिर्भरता कभी आत्मकेंद्रित नहीं हो सकती। जिस देश की मूल अवधारणा यह हो कि संपूर्ण वसुधा एक परिवार है, जो मानता हो कि पृथ्वी सबकी माता है और सब उसकी संतान हैं, वह भौगोलिक सीमाओं में होते हुए भी कोई कदम उठाते समय विश्व की चिंता अवश्य करेगा।

वास्तव में आज आत्मनिर्भरता शब्द के साथ कई खतरे जुड़े हैं। इसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में न समझा जाए तो यह संकीर्ण राष्ट्रवाद से लेकर विदेशी से घृणा तक चला जाता है। पश्चिमी सोच वाले लोग इसे फासीवाद तक का नाम दे सकते हैं। मोदी का उद्देश्य संकट के समय देशवासियों के अंदर यह आत्मविश्वास भरना है कि यह समय हमारे लिए अपने विचार के अनुरूप भारत बनाने का संकल्प लेकर काम करने का है ताकि हम इतने सक्षम हो सकें कि स्वार्थों के टकराव पर आधारित अमानवीय विश्व व्यवस्था को भारतीय विचार के अनुरूप मानव कल्याण पर आधारित ढांचे में रूपांतरित करने की भूमिका निभा सकें। जो देश स्वयं ही सक्षम नहीं होगा, जहां के नागरिकों के अंदर अपने लक्ष्य की कल्पना नहीं होगी और उसे पाने के लिए प्राणपण से काम करने का भाव नहीं होगा वह न आंतरिक रूप से मजबूत हो सकता है और न उसकी प्रभावी वैश्विक भूमिका ही हो सकती है।

सूडोकु नवताल- 5357

कठिनतम

				5	1	4		
			7				2	
		8						3
	1							8
5				4				9
7							6	
4						7		
	2				6			
		3	9	8				

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5356 का हल

4	7	6	3	5	2	9	1	8
5	9	8	6	7	1	4	3	2
2	3	1	8	9	4	7	6	5
6	8	5	7	3	9	2	4	1
3	2	4	5	1	6	8	7	9
7	1	9	4	2	8	3	5	6
8	4	3	2	6	5	1	9	7
1	5	2	9	4	7	6	8	3
9	6	7	1	8	3	5	2	4

अपना ब्लॉग

मेक इन इंडिया की चर्चा

मोहन। ध्यान रखने की बात है कि मोदी ने एक बार भी स्वदेशी शब्द का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने मेक इन इंडिया की चर्चा अवश्य की। यानी विदेशी कंपनियां भारत में आएं, उत्पादन करें, अपना सामान यहां बेचें और मेड इन इंडिया की मुहर के साथ विश्व बाजार में भी ले जाएं। यह स्वदेशी का नया फलक है। जो पांच पिलर उन्होंने बताए उनमें इकॉनमी, इन्फ्रास्ट्रक्चर और डिमांड के साथ सिस्टम और डेमोग्राफी भी है। इसी तरह चार एल में लैंड, लेबर लिक्विडिटी के साथ लॉ भी है। यानी 21वीं सदी के नेतृत्वकर्ता आत्मनिर्भर व सक्षम भारत के लिए हमें सिस्टम में व्यापक बदलाव करना है और अप्रासंगिक हो चुके कानूनों को खत्म कर वर्तमान समय व राष्ट्रीय उद्देश्य के अनुरूप कानून बनाने हैं। इसमें कला और अध्यात्म का उन्नयन है तो रक्षा और सुरक्षा को सशक्त करना भी है। सबसे बढ़कर समाज के हर व्यक्ति के कल्याण की चिंता करना है।